Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh
Date- Class-VI
Subject- Hindi Literature Page-1
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

नवतरंग भाग-6
पाठ-3 'मेरे स्कूल के दिन' (भाग-2)
लेखक- महात्मा गाँधी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ-3 'मेरे स्कूल के दिन' कक्षा छठी की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक नवतरंग भाग-6 की पृष्ठ संख्या-21 में दिया गया है। यह पाठ आपको 5 मई, 2022 को भेजा जाएगा।

प्यारे बच्चो! आज हम पाठ-3 'मेरे स्कूल के दिन' का अगला भाग पढ़ेंगे। इसलिए सभी बच्चे अपनी हिन्दी की पुस्तक नवतरंग भाग-6 का पृष्ठ-21 निकाल लें और अपने पास हिन्दी की एक अभ्यास पुस्तिका भी रख लें क्योंकि मैं आपको पाठ के बीच में कुछ कार्य लिखने के लिए भी दूँगी। यदि आप तैयार हैं तो मैं आपको पाठ 'मेरे स्कूल के दिन' का अगला भाग समझाने जा रही हूँ। सभी बच्चे इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे एवं समझेंगे।

बच्चो! पाठ के पिछले भाग में हमने पढ़ा कि गाँधी जी ने इस पाठ में अपने स्कूल के दिनों के बारे में लिखा है। बच्चो! गाँधी जी एक होनहार और अच्छे विद्यार्थी थे। उन्हें अपने विद्यार्थी काल में कई बार छात्रवृत्तियाँ भी मिली। गाँधी जी को कसरत करना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। गाँधी जी एक अच्छे बच्चे की नाईं अपने पिता जी की सेवा करते थे।

Scanned with CamScanner

Date-
Class - VI
Subject - Hindi Literature
Page-2
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

बच्चो ! अब मैं आपको आगे पाठ पढ़कर सुनाऊँगी, सभी बच्चे इसे अपनी-अपनी पुस्तक में से देखकर मेरे साथ-साथ पढ़ेंगे।

मैंने अनुभव किया कि खराब अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी मानी जानी चाहिए। बाद में मैंने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया, पर पके घड़े पर कहीं गला जुड़ता है? हर एक नवयुवक और नवयुवती मेरे उदाहरण से सबक ले और समझे कि सुंदर लेखन अच्छी विद्या का आवश्यक अंग है। अच्छे अक्षर सीखने के लिए चित्रकला आवश्यक है। मेरी तो यह राय बनी है कि बालकों को चित्रकला पहले सिखानी चाहिए। जिस तरह पक्षियों, वस्तुओं आदि को देखकर बालक उन्हें याद रखता है और आसानी से उन्हें पहचानता है, उसी तरह अक्षर पहचानना सीखे और जब चित्रकला सीखकर चित्र आदि बनाने लगे तभी अक्षर लिखना सीखे, तो उसके अक्षर छपे अक्षरों के समान सुंदर होंगे।

इस समय के अध्ययन के दूसरे दो **संस्मरण** उल्लेखनीय है। ब्याह के कारण जो एक साल नष्ट हुआ, उसे बचा लेने की बात दूसरी कक्षा के शिक्षक ने मेरे सामने रखी थी। उन दिनों परिश्रमी विद्यार्थी को इसके लिए अनुमति मिलती थी। इस कारण तीसरी कक्षा में छह महीने रहा और गरमी की छुट्टियों से पहले होनेवाली परीक्षा के बाद मुझे चौथी कक्षा में बैठाया गया। इस कक्षा से थोड़ी पढ़ाई अंग्रेज़ी माध्यम से होनी थी। मेरी समझ में कुछ न आता था। भूमिति भी चौथी कक्षा से शुरू होती थी। भूमिति के शिक्षक अच्छी तरह समझाकर पढ़ाते थे, पर मैं कुछ समझ ही न पाता था। मैं अकसर निराश हो जाता था। कभी-कभी यह भी सोचता कि एक साल में दो कक्षाएँ करने का विचार छोड़कर मैं तीसरी कक्षा में लौट जाऊँ। पर ऐसा करने में मेरी लाज जाती, और जिन शिक्षक ने मेरी लगन पर भरोसा करके मुझे चढ़ाने की सिफ़ारिश की थी उनकी भी लाज जाती। इस भय से नीचे जाने का विचार तो छोड़ ही दिया।

Scanned with CamScanner

_/_/_

Date- Class- VI

Subject - Hindi Literature Page- 3

Subject Teacher- Ms. Roma Rani

> जब प्रयत्न करते-करते मैं युक्लिड के तेरहवें प्रमेय तक पहुँचा, तो अचानक मुझे बोध हुआ कि भूमिति तो सरल से सरल विषय है। जिसमें केवल बुद्धि का सीधा और सरल प्रयोग ही करना है, उसमें कठिनाई क्या है? उसके बाद तो भूमिति मेरे लिए सदा ही सरल और सरस विषय बना रहा।
>
> **बातचीत के लिए**
>
> गांधी जी क्यों मानते थे कि बच्चों को चित्रकला पहले सीखना चाहिए?

बच्चो! यहाँ तक के पाठ में हमने पढ़ा कि गाँधी जी इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि प्रत्येक बालक की लिखाई अच्छी होनी चाहिए क्योंकि खराब अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी मानी जानी चाहिए। गाँधी जी का सुझाव था कि लिखाई सुधारने के लिए बच्चों को चित्रकला सिखानी चाहिए। गाँधी जी ने तीसरी और चौथी कक्षा एक ही वर्ष में करी थी। चौथी कक्षा में थोड़ी पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में होती थी। जिस कारण गाँधी जी को थोड़ी समस्या भी होती थी।

बच्चो! इस पृष्ठ पर आए कुछ कठिन शब्द समझते हैं।

संस्मरण - याद रखी गई कोई घटना

भूमिति - ज्यामिति (Geometry) भूमि या खेत नापने की क्रिया

युक्लिड - ज्यामिति के पिता

प्रमेय - प्रमाण का विषय

सरस - रस से भरा हुआ

बच्चो! गाँधी जी को शुरु-शुरु में ज्यामिति से बहुत डर लगता था, परन्तु बाद में उन्हें उसमें रस आने लग गया।

बच्चो! मैंने आपको यहाँ तक पाठ समझा दिया है। अब मैं आपसे इसके आधार पर कुछ प्रश्न पूछूँगी। अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे और इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

Scanned with CamScanner

__/__/__

Date -   Class - VI
Subject - Hindi Literature   Page - 4
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

प्रश्न - 1. खराब लिखाई किस बात की निशानी है ?
प्रश्न - 2. संस्मरण का अर्थ लिखें।
प्रश्न - 3. गाँधी जी को कौन-सा विषय समझ नहीं आता था ?
प्रश्न - 4 गाँधी जी ने कौन-सी कक्षाएँ एक ही वर्ष में कर ली थीं ?

बच्चो ! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हो गया है। अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर - 1. खराब लिखाई अधूरी शिक्षा की निशानी है।
उत्तर - 2. संस्मरण का अर्थ है - याद रखी गई कोई घटना
उत्तर - 3. भूमिति
उत्तर - 4. कक्षा तीसरी और चौथी

बच्चो ! अब मैं आपको आगे पाठ पढ़कर सुनाऊँगी, जिसे सभी बच्चे मेरे साथ-साथ अपनी-अपनी पुस्तक में से देखकर पढ़ेंगे एवं समझेंगे।

भूमिति की अपेक्षा संस्कृत ने मुझे अधिक परेशान किया। भूमिति में रटने की कोई बात थी ही नहीं, जब कि मेरी दृष्टि से संस्कृत में तो सब रटना ही होता था। यह विषय भी चौथी कक्षा में शुरू हुआ था। छठी कक्षा में मैं हारा। संस्कृत के शिक्षक बहुत कड़े मिज़ाज के थे। विद्यार्थियों को अधिक सिखाने का लोभ रखते थे। संस्कृत वर्ग और फ़ारसी वर्ग के बीच एक प्रकार की होड़ रहती थी। फ़ारसी सिखाने वाले मौलवी नरम मिज़ाज के थे। विद्यार्थी आपस में बात करते कि फ़ारसी तो बहुत आसान है और फ़ारसी शिक्षक बहुत भले हैं। विद्यार्थी जितना काम करते हैं , उतने से वे संतोष कर लेते हैं। मैं भी आसान होने की बात सुनकर ललचाया और एक दिन फ़ारसी वर्ग में जाकर बैठा। संस्कृत शिक्षक को दुख हुआ। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा, ''तुझे जो कठिनाई हो सो मुझे बता। मैं तो सब विद्यार्थियों को बढ़िया संस्कृत सिखाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस के घूँट पीने को मिलेंगे। तुझे इस तरह हार नहीं मानना चाहिए। तू फिर से मेरे वर्ग में बैठ।'' मैं शरमाया। शिक्षक के प्रेम की अवमानना न कर सका। आज मेरी आत्मा कृष्णशंकर मास्टर का उपकार मानती है। क्योंकि जितनी संस्कृत मैं उस समय सीखा, उतनी भी न सीखा होता, तो आज संस्कृत शास्त्रों में जितना रस ले सकता हूँ उतना न ले पाता। मुझे तो इस बात का पश्चाताप होता है कि मैं अधिक संस्कृत न सीख सका। क्योंकि बाद में मैं समझा कि किसी भी बालक को संस्कृत का अच्छा अभ्यास किए बिना रहना ही न चाहिए।

Scanned with CamScanner

Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 5
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

अब तो मैं यह मानता हूँ कि भारतवर्ष की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी का स्थान होना चाहिए। भाषा की इस संख्या से किसी को डरना नहीं चाहिए। भाषा पद्धतिपूर्वक सिखाई जाए और सब विषयों को अंग्रेज़ी के माध्यम से सीखने-सोचने का बोझ हम पर न हो, तो ऊपर की भाषाएँ सीखना बोझ न होगा, बल्कि उसमें बहुत ही आनंद आएगा। और जो व्यक्ति एक भाषा को सीख लेता है, उसके लिए दूसरी का ज्ञान सुलभ हो जाता है।

बातचीत के लिए

भूमिति गांधी जी के लिए सरल विषय कैसे बना?
गांधी जी फ़ारसी भाषा की कक्षा में क्यों जाने लगे थे?

बच्चो! आगे के पाठ में गाँधी जी ने अपने स्कूल के दिनों की दूसरी समस्या के बारे में बताया है। गाँधी जी को कक्षा चौथी में भूमिति से भी ज़्यादा डर संस्कृत विषय से लगता था। उस समय कुछ विद्यार्थी संस्कृत लेते थे तो कुछ फ़ारसी। फ़ारसी के विद्यार्थी गाँधी जी को उकसाते कि फ़ारसी, संस्कृत से आसान विषय है। गाँधी जी ने मन बना लिया कि वे भी फ़ारसी सीखेंगे परन्तु संस्कृत के अध्यापक कृष्णशंकर जी के सहयोग से गाँधी जी बहुत अच्छी संस्कृत सीख पाए। गाँधी जी का मानना है कि भारत की उच्च शिक्षा में मातृभाषा के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी का स्थान भी होना चाहिए।

इस प्रकार गाँधी जी के इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी लिखाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उसे रोज़ाना कसरत करनी चाहिए। इसके साथ ही बच्चों को भारत की अन्य भाषाओं का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

बच्चो! मैंने आपको यहाँ तक पाठ समझा दिया है। अब मैं आपको इसके आधार पर कुछ

Scanned with CamScanner

__/__/__

Date- Class- VI

Subject- Hindi Literature Page-6

Subject Teacher- Ms. Roma Rani

प्रश्न पूछूँगी। अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे और इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. ज्यामिति की अपेक्षा गाँधी जी को कौन-से विषय ने अधिक परेशान किया?

प्रश्न-2. गाँधी जी के संस्कृत के अध्यापक का क्या नाम था?

प्रश्न-3. गाँधी जी के अनुसार मातृभाषा भाषा के अतिरिक्त कौन-सी भाषाएँ भी बच्चों को सिखानी चाहिए?

बच्चो। अब आपका अंतराल का समय समाप्त हो गया है। अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. संस्कृत

उत्तर-2. कृष्णशंकर

उत्तर-3. हिन्दी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेजी।

बच्चो! आज मैंने आपको पूरा पाठ समझा दिया है। आशा है यह आपको अच्छे से समझ आ गया होगा। अब मैं आपको गृह कार्य दूँगी, जिसे सभी बच्चे अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में सुंदर लिखाई में लिखेंगे।

गृह कार्य :-

- बच्चो! आप इस पाठ को अच्छे से समझने के लिए दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे।
- आप इस पाठ के पृष्ठ-23 पर आए 'विस्तार से' के प्रश्न करने की कोशिश करेंगे।
- आपको इस कार्य की उत्तर-पत्रिका वीरवार को भेजी जाएगी।

धन्यवाद!

Last page.

Scanned with CamScanner